UP Board Important Questions Class 9 इतिहास Chapter 4 वन्य समाज एवं उपनिवेशवाद Itihas

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.
वन विनाश किसे कहते हैं?
उत्तर:
वनों के लुप्त होने को सामान्यतः वन विनाश कहते हैं।

प्रश्न 2.
औपनिवेशिक काल में वन विनाश के मुख्य कारण बतलाइये।
उत्तर:

- जमीन की बेहतरी करना
- रेल की पटरियों के स्लीपर हेतु लकड़ी की आवश्यकता
- बागानों का विकास।

प्रश्न 3.
खेती के विस्तार को क्या माना जाता है? इससे क्या नुकसान है?
उत्तर:
खेती के विस्तार को विकास का सूचक माना जाता है। इससे वन क्षेत्र में कमी आती है।

प्रश्न 4.
स्लीपर किसे कहते हैं?
उत्तर:
रेल की पटरी के आर-पार लगे लकड़ी के तख़्ते जो पटरियों को उनकी जगह पर रोके रखते हैं, स्लीपर कहलाते हैं।

प्रश्न 5.
भारत का पहला वन महानिदेशक कौन था?
उत्तर:
जर्मन विशेषज्ञ डायट्रिच बॅंडिस।

प्रश्न 6.
हम विकास का सूचक किसे मानते हैं?
उत्तर:
खेती के विस्तार को।

प्रश्न 7.
इम्पीरियल फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना कब और कहां की गई?
उत्तर:
इम्पीरियल फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना 1906 में देहरादून में की गई।

प्रश्न 8.
प्रथम भारतीय वन अधिनियम कब लागू हुआ?
उत्तर:
1865 में।

प्रश्न 9.
भारतीय वन अधिनियम 1865 को कब संशोधित किया गया?
उत्तर:
भारतीय वन अधिनियम 1865 को दो बार पहले 1878 में और फिर 1927 में संशोधित किया गया।

प्रश्न 10.
वनों को कितनी श्रेणियों में बाँटा गया?
अथवा
1878 के अधिनियम में जंगलों को कितनी श्रेणियों में बाँटा गया?
उत्तर:
1878 के अधिनियम में जंगलों को तीन श्रेणियों में बांटा गया-(1) आरक्षित, (2) सुरक्षित, (3) ग्रामीण।

प्रश्न 11.
आरक्षित वन से आप क्या समझते हैं?
उत्तर:
सबसे अच्छे जंगलों को आरक्षित वन कहा जाता है। गाँव वाले इन जंगलों से अपने उपयोग के लिए कुछ भी नहीं ले सकते हैं।

प्रश्न 12.
वन-विभाग द्वारा सागौन और साल वृक्षों को क्यों प्रोत्साहन दिया गया?
उत्तर:
वन-विभाग ने जहाजों और रेलवे के लिए इमारती लकड़ी मुहैया कराने के लिए सागौन और साल वृक्षों को प्रोत्साहन दिया।

प्रश्न 13.
वैज्ञानिक वानिकी से क्या आशय है?
उत्तर:
वन विभाग द्वारा पेड़ों की कटाई का तरीका जिसमें पुराने पेड़ काटकर उनकी जगह नये पेड़ लगाये जाते हैं, वैज्ञानिक वानिकी कहलाता है।

प्रश्न 14.
भारत में घुमंतू खेती को किन नामों से पुकारा जाता है?
उत्तर:

https://www.evidyarthi.in/

भारत में घुमंतू खेती को धया, पेंदा, बेवर, नेवड़, झूम, पोडू, खंदाद और कुमरी नामों से पुकारा जाता है।

प्रश्न 15.
औपनिवेशिक शासन काल के दौरान भारत में शिकार की आजादी किसे थी?
उत्तर:
औपनिवेशिक शासन काल के दौरान भारत में राजाओं, नवाबों तथा अंग्रेज अफसरों को शिकार की आजादी थी।

प्रश्न 16.
भारत में वन्य समुदायों द्वारा किये गये विद्रोहों के किन्हीं तीन नायकों तथा सम्बन्धित क्षेत्रों के नाम लिखिये।
उत्तर:

नायक	क्षेत्र
1. सीधू	संथाल परगना
2. बिरसा मुंडा	छोटा नागपुर
3. अल्लूरी सीताराम राजू	आंध्रप्रदेश।

प्रश्न 17.
घुमंतू खेती को श्रीलंका में क्या कहते हैं?
उत्तर:
घुमंतू खेती को श्रीलंका में 'चेना' कहते हैं।

प्रश्न 18.
बस्तर का विद्रोह कब हुआ?
उत्तर:
सन् 1910 में।

प्रश्न 19.
बस्तर कहाँ स्थित है?
उत्तर:
बस्तर जिला छत्तीसगढ़ राज्य के सबसे दक्षिणी भाग में स्थित है।

प्रश्न 20.
कलांग कौन थे?
अथवा

जावा के कलांग समुदाय की प्रमुख विशेषता बताइये।
उत्तर:
जावा में कलांग समुदाय के लोग कुशल लकड़हारे तथा घुमंतू किसान थे।

प्रश्न 21.
जावा पर जापानियों के कब्जे से ठीक पहले डचों ने कौनसी नीति अपनाई?
उत्तर:
भस्म कर भागो नीति (Scorched Earth Policy)।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.
'देवसारी' अथवा 'दांड' किसे कहते हैं?
उत्तर:
बस्तर क्षेत्र में यदि एक गांव के लोग दूसरे गांव के जंगल से थोड़ी लकड़ी लेना चाहते हैं तो इसके बदले में वे एक छोटा शुल्क अदा करते हैं, जिसे 'देवसारी' अथवा 'दांड' अथवा 'मान' कहा जाता है।

प्रश्न 2.
बस्तर में वन ग्राम किसे कहा गया?
उत्तर:
बस्तर में कुछ गांवों को आरक्षित वनों में इस शर्त पर रहने दिया गया कि वे वन विभाग के लिए पेड़ों की कटाई और ढुलाई का काम मुफ्त में करेंगे और जंगल को आग से बचाये रखेंगे। इन्हीं गांवों को वन ग्राम कहा गया।

प्रश्न 3.
वैज्ञानिक वानिकी से क्या अभिप्राय है?
उत्तर:
वैज्ञानिक वानिकी प्रणाली-वन विभाग द्वारा पेड़ों की कटाई का वह तरीका जिसमें पुराने पेड़ काटकर उनकी जगह नये पेड़ लगाये जाते हैं, वैज्ञानिक वानिकी प्रणाली कहलाती है। इम्पीरियल फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट में इसकी शिक्षा दी जाती थी।

प्रश्न 4.
भारत में बस्तर क्षेत्र कहाँ स्थित है? यहाँ कौन-कौन से आदिवासी समुदाय रहते हैं?
उत्तर:
भारत में बस्तर क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य के सबसे दक्षिणी भाग में स्थित आंध्रप्रदेश, उड़ीसा व महाराष्ट्र की सीमाओं से लगा क्षेत्र है। बस्तर में मारिया और मुरिया, गोंड, धुरवा, भतरा, हलबा आदि अनेक आदिवासी समुदाय रहते हैं।

प्रश्न 5.
मनुष्य के लिए वनों की आवश्यकता के कारण बताइये।
अथवा
वन क्षेत्र को बढ़ावा क्यों आवश्यक है ? कोई तीन कारण दीजिये।
उत्तर:
निम्न कारणों से वन क्षेत्र को बढ़ाना आवश्यक है-

https://www.evidyarthi.in/

- वन उत्पादों की प्राप्ति-वनों से हमें उद्योगों के लिए कच्चा माल, इमारती लकड़ी, जलाऊ लकड़ी, बांस, गोंद, शहद, घास, फल-फूल, जड़ी-बूटियां, मसाले, रेशम तथा अन्य कच्चा माल प्राप्त होता है।
- पर्यावरण संरक्षण तथा पारिस्थितिकी सन्तुलन-वन पर्यावरण का संरक्षण करते हैं तथा पारिस्थितिकी सन्तुलन बनाये रखने में सहायक होते हैं।
- प्रजाति संरक्षण-वनों से हमें वन्य जीवों तथा वनस्पति की हजारों प्रजातियाँ मिलती हैं। ऐमेजॉन या पश्चिमी घाट के जंगलों के एक ही टुकड़े में पौधों की 500 अलग-अलग प्रजातियाँ मिल जाती हैं।

प्रश्न 6.
उपनिवेशी काल में खेती के तीव्र प्रसार के कोई तीन कारणों का उल्लेख कीजिए।
उत्तर:
उपनिवेशी काल में खेती के तीव्र प्रसार के तीन कारण निम्न प्रकार हैं-

- बढ़ती आबादी-उपनिवेशी काल में आबादी में तेजी से वृद्धि हुई। इस बढ़ती आबादी के लिए खाद्य पदार्थों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए जंगलों को साफ करके खेती का विस्तार किया गया।
- व्यावसायिक फसलों को प्रोत्साहन-अंग्रेजों ने यूरोप के औद्योगिक उत्पादन के लिए कच्चे माल की पूर्ति हेतु व्यावसायिक फसलों, जैसे-पटसन, गन्ना, गेहूँ व कपास के उत्पादन को जम कर प्रोत्साहित किया। अतः खेती का तीव्र प्रसार हुआ।
- जंगलों को अनुत्पादक समझना-औपनिवेशिक सरकार ने प्रारम्भ में जंगलों को अनुत्पादक समझा। अतः जंगलों में खेती करके कृषि उत्पाद तथा राजस्व प्राप्ति हेतु खेती का प्रसार किया।

प्रश्न 7.
वैज्ञानिक वानिकी के नाम पर वन-प्रबन्धन के लिए क्या-क्या कदम उठाये गये?
उत्तर:
वैज्ञानिक वानिकी के नाम पर वन-प्रबन्धन के लिए निम्न कदम उठाये गये-

- वैज्ञानिक वानिकी के नाम पर भारत में विविध प्रजाति वाले प्राकृतिक वनों को काट डाला गया।
- इनकी जगह सीधी पंक्ति में एक ही किस्म के पेड़ लगा दिए गए। इसे बागान कहा जाता है।
- वन विभाग के अधिकारियों ने जंगलों का सर्वेक्षण किया, विभिन्न किस्म के पेड़ों वाले क्षेत्र की नाप-जोख की।

- वन-प्रबंधन के लिए उन्होंने योजनाएँ बनायीं।
- उन्होंने यह भी तय किया कि बागान का कितना क्षेत्र प्रतिवर्ष काटा जाएगा। कटाई के बाद खाली जमीन पर कितने पेड़ लगाए जाएं।

वर्तमान में पारिस्थितिकी विशेषज्ञों सहित ज्यादातर लोग मानते हैं कि यह पद्धति कतई वैज्ञानिक नहीं है।

प्रश्न 8.
जर्मन विशेषज्ञ डायट्रिच बैंडिस द्वारा वनों के संरक्षण के लिए दिये गये तीन सुझाव बतलाइये।
उत्तर:

- भेंडिस ने जंगलों के प्रबंधन के लिए व्यवस्थित तंत्र विकसित करने का सुझाव दिया।
- उन्होंने पेड़ों की कटाई और पशुओं को चराने जैसी गतिविधियों पर पाबंदी लगाकर वनों को आरक्षित करने का सुझाव दिया।
- इस तंत्र की अवमानना करके पेड़ काटने वाले किसी भी व्यक्ति को सजा का भागी बनना होगा।

प्रश्न 9.
1850 के दशक में अंग्रेजों द्वारा रेल लाइनों का जाल क्यों फैलाया गया? रेलों के विस्तार के लिए जंगली लकड़ी की आवश्यकता क्यों थी?
उत्तर:
1850 के दशक में अंग्रेजों द्वारा रेल लाइनों का जाल निम्न कारणों से फैलाया गया-

- कम समय के अन्दर शाही सेना, हथियारों तथा औजारों को एक जगह से दूसरी जगह लाने-ले-जाने के लिये।
- औपनिवेशिक व्यापार की सुविधा के लिए।
- रेलों के विस्तार के लिए जंगली लकड़ी की आवश्यकता स्लीपरों और ईंधन की पूर्ति के लिये थी।

प्रश्न 10.
भारत में 1878 के वन अधिनियम के किन्हीं तीन सुधार प्रावधानों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर:
भारत में 1878 के वन अधिनियम के सुधार प्रावधान निम्न प्रकार हैं-

- 1878 के वन अधिनियम में जंगलों को तीन श्रेणियों में बाँटा गया-(i) आरक्षित, (ii) सुरक्षित व (iii) ग्रामीण।

- सबसे अच्छे जंगलों को 'आरक्षित वन' कहा गया। गाँव वाले इन जंगलों से अपने उपयोग के लिए कुछ भी नहीं ले सकते थे। वे घर बनाने या ईंधन के लिए केवल सुरक्षित या ग्रामीण वनों से ही लकड़ी ले सकते थे।
- इस अधिनियम का उल्लंघन करने वालों के लिए दण्ड की व्यवस्था की गई थी।

प्रश्न 11.
अच्छे जंगल के बारे में वनपालों तथा ग्रामीणों के विचार में क्या भिन्नता थी?
उत्तर:
अच्छे जंगल के बारे में वनपालों तथा ग्रामीणों के विचार में निम्न भिन्नताएँ थीं-
(1) वनपाल वैज्ञानिक वानिकी के पक्ष में थे तो ग्रामीण अपनी पारंपरिक वानिकी के पक्ष में थे।

(2) ग्रामीण अपनी अलग-अलग जरूरतों, जैसे-ईंधन, चारे व पत्तों की पूर्ति के लिए वन में विभिन्न प्रजातियों चाहते थे, जबकि वन-विभाग को ऐसे पेड़ों की जरूरत थी जो जहाजों और रेलवे के लिए इमारती लकड़ी मुहैया करा सकें, ऐसी लकड़ियाँ जो सख्त, लंबी और सीधी हों। इसलिए वनपालों ने सागौन और साल जैसी प्रजातियों को प्रोत्साहित किया और दूसरी किस्में काट डाली गईं।

प्रश्न 12.
घुमन्तू कृषि किसे कहते हैं?
अथवा
घुमंतू कृषि पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।
उत्तर:
घुमंतू कृषि एशिया, अफ्रीका व दक्षिण अमेरिका के अनेक भागों में खेती का एक परंपरागत तरीका है। इसमें किसी स्थान पर स्थायी रूप से कृषि नहीं की जाती है।

https://www.evidyarthi.in/

घुमंतू कृषि के लिए जंगल के कुछ भागों को बारी-बारी से काटा और जलाया जाता है। मानसून की पहली बारिश के बाद इस राख में बीज बो दिए जाते हैं और अक्टूबर-नवंबर में फसल काटी जाती है। इन खेतों पर दो-एक साल खेती करने के बाद इन्हें 12 से 18 साल तक के लिए परती छोड़ दिया जाता है जिससे वहाँ फिर से जंगल पनप जाएं। घुमंतू कृषि में मिश्रित फसलें उगायी जाती हैं जैसे मध्य भारत और अफ्रीका में ज्वार-बाजरा, ब्राजील में कसावा और लैटिन अमेरिका के अन्य भागों में मक्का व फलियाँ।

प्रश्न 13.
औपनिवेशिक सरकार ने घुमंत खेती पर प्रतिबंध क्यों लगाया ?
उत्तर:
घुमंतू खेती पर प्रतिबन्ध के कारण-

- उनकी नजर में घुमंतू खेती का तरीका जंगलों के लिए नुकसानदेह था। उन्होंने महसूस किया कि जहाँ कुछेक सालों के अंतर पर खेती की जा रही हो ऐसी जमीन पर रेलवे के लिए इमारती लकड़ी वाले पेड़ नहीं उगाए जा सकते।
- जंगल जलाते समय बाकी बेशकीमती पेड़ों को भी फैलती लपटों की चपेट में आ जाने का खतरा बना रहता था।
- घुमंतू खेती के कारण सरकार के लिए लगान का हिसाब रखना भी मुश्किल था।

प्रश्न 14.
वनों के नियमन से खेती कैसी प्रभावित हुई?
उत्तर:
वनों के नियमन से झूम या घुमन्तू खेती प्रभावित हुई। घुमन्तू कृषि के लिए जंगल के कुछ भागों को बारी बारी से काटा जाता और जलाया जाता है। मानसून की पहली बारिश के बाद इस राख में बीज बो दिए जाते हैं और अक्टूबर में फसल काटी जाती है। इन भूखण्डों में मिश्रित फसलें उगायी जाती हैं, जैसे-ज्वार-बाजरा, कसावा, मक्का आदि।

सरकार द्वारा वनों के नियमन द्वारा घुमन्तू खेती पर रोक लगा दी। अनेक कृषक समुदायों को जंगलों के घर से जबरन विस्थापित कर दिया गया। इससे खेती प्रभावित हुई।

प्रश्न 15.
डच उपनिवेशिकों द्वारा लागू किये गये वन कानूनों का जावा के स्थानीय निवासियों पर क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर:
वन कानूनों का जावा के स्थानीय निवासियों पर निम्न प्रभाव पड़ा-

- ग्रामीणों की जंगल तक पहुँच पर अनेक बन्दिशें लगा दी गईं।
- ग्रामीणों द्वारा केवल चुने हुए जंगलों से ही नाव व घर बनाने जैसे विशेष उद्देश्यों के लिए लकड़ी काटी जा सकती थी और वह भी कड़ी निगरानी में।
- ग्रामीणों को मवेशी चराने, बिना परमिट लकड़ी ढोने या जंगल से गुजरने वाली सड़क पर घोड़ा गाड़ी अथवा जानवरों पर चढ़कर आने-जाने के लिए दण्डित किया जाने लगा।
- डचों द्वारा जंगलों में खेती की जमीनों पर लगान लगा दिया गया और बाद में लकड़ी ढोने के लिए मुफ्त भैंसें उपलब्ध कराने की शर्त पर इसे मुक्त कर दिया गया।
- वन-ग्रामवासियों के वन-भूमि पर खेती करने के अधिकार सीमित कर दिए गए।

प्रश्न 16.
सामिन की चुनौती पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
उत्तर:
सामिन का पूरा नाम सुरोन्तिको सामिन था। वह जावा के सागौन के जंगलों में स्थित रान्दुब्लातुंग गाँव का रहने वाला था। उसने डचों के जंगलों पर राजकीय मालिकाने पर सवाल खड़ा किया। उसका तर्क था कि हवा, पानी, जमीन और लकड़ी राज्य की बनायी हुई नहीं हैं इसलिए उन पर उसका अधिकार नहीं हो सकता। जल्दी ही उसके नेतृत्व में एक व्यापक आंदोलन खड़ा हो गया। 1907 तक 3,000 परिवार उसके विचारों को मानने लगे थे। डच जब जमीन का सर्वेक्षण करने आए तो कुछ सामिनवादियों ने अपनी जमीन पर लेट कर इसका विरोध किया जबकि दूसरों ने लगान या जुर्माना भरने या बेगार करने से इनकार कर दिया।

प्रश्न 17.
प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध द्वारा भारत तथा जावा के वनों के प्रभावित होने के तीन प्रकार लिखिए।
उत्तर:
प्रथम तथा द्वितीय विश्व युद्ध में भारत तथा जावा के वन निम्न प्रकार प्रभावित हुए-

- दोनों विश्व युद्धों में भारत तथा जावा में युद्ध की जरूरतों को पूरा करने के लिए औपनिवेशिक सरकार द्वारा जमकर वृक्ष काटे गये।
- युद्ध के चलते वन संरक्षण की कार्य योजनाओं को स्थगित कर दिया गया। सरकार का ध्यान बंटने से स्थानीय निवासियों ने भी वनों में खेती का विस्तार किया।
- जावा पर जापानियों ने कब्जे के बाद वनों का निर्मम दोहन किया, जबकि भारत में ब्रिटिश सरकार ने ही जमकर वनों का दोहन किया।

https://www.evidyarthi.in/